Madhya Bharti
Humanities and Social Sciences

मध्य भारती
मानविकी एवं समाजविज्ञान की द्विभाषी शोध-पत्रिका

ISSN: 0974-0066

मैत्रेयी पुष्पा के सशक्त भावपक्ष और विविधतापूर्ण शैली शिल्प का मनोरंजक सामंजस्य

सूर्य प्रताप सिंह सेंगर
शोधार्थी, हिन्दी विभाग

डॉ. विक्रान्त शर्मा
विभागाध्यक्ष कला संकाय ''हिन्दी विभाग'', पी.के. विश्वविद्यालय, शिवपुरी, मध्य प्रदेश

सार

किसी भी कहानी, कविता अथवा नाटक में भाषा मूल रूप से दो भूमिकाएँ निभा सकती है। पहली भूमिका निभाती है लिखित भाषा जिसके माध्यम से किसी कहानी का भावपक्ष, पार्श्व एवं कार्यकलापों को दर्शाया जाता है। दूसरे प्रकार की भाषा होती है उच्चारित भाषाएं इस प्रकार की भाषा में संवाद बोले जाते हैं और भावनाओ को रेखांकित किया जाता है। दोनों प्रकार की भाषाएं जब शैली शिल्प के साथ एकरूप होकर एक नए संसार की रचना कर देती हैं तो फिर शुरू होती है किसी पाठक की मनोरंजन यात्रा। यदि शैली शिल्प और भाषा का एकाकार स्वरूप किसी विशिष्ट भावना की ओर प्रवाहित होने लगता है तो यह मनोस्थिति द्योतक है कथा की फौरी सफलता की जहां पर पाठक चरित्रों की भावनाओं से जुड़ जाता है। यदि शैलीशिल्प के माध्यम से उसी पाठक को लंबे समय तक जोड़ कर कहानी के संदेश जनमानस तक पहुंचाए जा सकें तो फिर फिर वह कलाकृति अजर अमर हो जाती है। इस स्थिति में एक पाठक सजीव रूप से कहानी को महसूस कर उसके साथ बहने लगते हैं और काले शब्दो से सफेद पृष्ठ मुद्रित एक कहानी विश्व पाठकों के सम्मुख आ जाती है।

इस पैमाने पर जब मैत्रेयी पुष्पा द्वारा रचे गए साहित्य को कसें तो हमें प्रतीत होता है कि कहानी और नाटक लेखन के सारे पारंपरिक नियमों का पालन करते समय भाषाएं, भाव और शैली में कुछ ऐसे परंपरागत और अपरम्परागत प्रयोग किए गए हैं जो दर्शक को चरित्र और परिस्थिति के साथ एक तरह के विशिष्ट बंधन में बांध देते हैं। उनकी कहानियों में प्रयुक्त, संकेत, प्रतीक, विम्ब और व्यंग्य चारो ही तत्व भावपक्ष और आकर्षक भाषा की मजबूत नींव पर बांधे गए हैं। यहाँ शैली और कहानी की संरचना पाठक को एक संवेदनशील और भावनात्मक यात्रा को मनोरंजन की चाशनी में डुबो देती है। इस वजह से मैत्रेयी पुष्पा का कटु यथार्थ चित्रण कभी भी उबाऊ नहीं होता अपितु उनके द्वारा गढ़े गए चित्र अंततः एक प्रकार की प्रेरणा देने में सफल हो जाते हैं। उनके द्वारा दी गयी प्रेरणा अक्सर आदर्शवादिता से कोसों दूर प्रायोगिक जीवन में सफल होना सिखाती है। वर्तमान आलेख मैत्रेयी पुष्पा की इस रचनाधर्मिता और प्रयोगधर्मिता को मनोरंजन के पैमाने पर कसने का प्रयास भी है।

भूमिका

इस आलेख के माध्यम से उनकी शैली को विशिष्ट बनाने वाले भाषा तत्वो की पहचान करने का प्रयास किया गया है। शैली के नियम, शैली के अंतर्गत भाषा की विवशता और मैत्रेयी पुष्पा द्वारा दिये गए संरचनात्मक तोड़ को पहचान कर उनकी लेखन शैली की समीक्षा करने साथ ये आलेख इन लेखों और कहानियों में समाहित मनोरंजन मान की भी व्याख्या करने का प्रयास करेगा। इस समीक्षा के अंतर्गत, उनकी लययुक्त शब्द

ISSN: 0974-0066

योजनाएं, गंभीर एवं समर्थ शब्दों का उचित चयन और शब्द चित्रों से जुड़ी शैली की मीमांसा भी की जाएगी। लेखिका की शैली किस प्रकार गंभीर विषय के बीच भी दर्शकों को गुदगुदाने में कामयाब रही इस तथ्य का भी अनुकूल आंकलन किया जाएगा।

कीवर्ड्स : भावपक्ष, शैलीशिल्प, भाषाशिल्प, संकेत, प्रतीक, बिम्ब

सशक्त और आकर्षक भाषापक्ष

पाठक की यात्रा एक प्रकार की उच्च भावभूमि तक पहुंचे इसके लिए मैत्रेयी पुष्पा ने भाषा को एक आकर्षक साधन के रूप में इस्तेमाल किया है। उनके सामने सबसे बड़ी चुनौती ये थी कि उनके किरदार ग्रामीण परिवेश से आते हैं तथा शहरी उपमाओं और रूपकों से अपरचित हैं। जिस दौर में उनकी प्रतिनिधि कहानियां और कवितायें छपी है उस वक्त के पाठक हिन्दी की खड़ी बोली के साथ अत्यंत सहज थे। महिलाओ से जुड़ा हुआ अर्थपूर्ण साहित्य उस समय मूल रूप से महानगरीय कहानियों की बपौती था। महनगरीय चरित्रों की रचना करते समय भाषा का बंधन उतना जटिल नहीं था। उनके समय की ज्यादातर लेखिकाएं शहरों में प्रयुक्त बोलचाल की भाषा का इस्तेमाल कर रही थीं। ऐसा करते समय वे कभी प्रहारक शब्दों का इस्तेमाल भी करती थी। महिला संबंधी साहित्य के लिए ये एक प्रकार का खाका था जिसके अंतर्गत लगातार लेखन का कार्य जारी था।

कहानियों की इसी भीड़ में ग्रामीण परिवेश की कहानियां लिखना बड़ी चुनौती का कार्य था। ऐसा करते समय भाषा सबसे बड़ी चुनौती थी। यदि किरदारों की भाषा के आधार पर कहानी को आगे बढ़ाया जाता तो महानगरीय पाठक इन कहानियों से दूर हो जाते और ये सिर्फ आंचलिक कहानियों के रूप में सिमट जाती। इस वजह से पुष्पा जी की कहानियों में किरदार जो भाषा बोलते थे उसे समझने के लिए पाठक को ज्यादा जद्दोजहद न करनी पड़े ये सबसे बड़ी चुनौती थी। इस चुनौती का सामना करने के लिए मैत्रेयी पुष्पा ने अपनी कहानियों में कई परतों का निर्माण किया। उनकी ज्यादातर कहानियों में ऐसे चरित्र डाले गए जो शहरी दृष्टिकोण से गाँव को देखते थे। कई कहानियो में उन्होने अदृश्य पर्यवेक्षक भी प्रस्तुत किए। ये अदृश्य पर्यवेक्षक महानगरीय भाषा और सोच विचार का प्रतिनिधित्व करते थे। इसी प्रभाव को मुखरता से लाने के लिए उन्होंने महिला किरदारों के संवादों को काव्यात्मक और संक्षिप्त रखा ताकि अधिक शब्दो की भीड़ में कहीं पाठक की भाव सुग्राहिता और एकाग्रता व्यस्त न हो जाये। इन कहानियों में जब किसी दुर्भाग्यपूर्ण घटनाक्रम की विवेचना अदृश्य पर्यवेक्षक ने की तो वहाँ पर तीक्ष्ण और प्रहारक भाषा का इस्तेमाल किया गया।

मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों में भाषा का समावेश

मूल रूप से पुष्पा जी ने अपनी कहानियो में इंग्लिश, फारसी, उर्दू, बुंदेलखंडी, अरबी, फारसी और संस्कृत शब्दों का काफी उपयोग किया। शब्दों के इस इंद्रधनुष ने उनकी कहानियों की सार्वभौमिकता को एक नए स्तर पर ले जाकर खड़ा कर दिया। दूसरे शब्दों में ये भी कहा जा सकता है कि अपने किरदारों के भावपक्ष की व्याख्या वर्तमान जगत के शब्दों से कर के पुष्पा जी ने कहानी के परिवेश और पाठकों के मध्य एक सेतु का निर्माण कर दिया। इस सेतु के कारण उनकी रचनाएं प्रथम चरण में सार्वभौमिक हुयी और उसके बाद कालजयी हो गयी। साथ ही साथ वो एक ऐसे अंचल की कहानियां सामने लाने में सफल हो गयी जो उनके आने से पहले एक प्रकार के स्टीरियोटाइप में जकड़ा हुआ था। महानगरीय कहानियों के रचनाकार

ISSN: 0974-0066

जब इस परिवेश से कोई चरित्र उठाते थे तब उनके सामने कुछ गिने चुने रंगे सियार जैसे चरित्र होते थे। आम तौर पर इन चरित्रों का काम भी कहानी में संक्षिप्त ही होता था। मगर पुष्पा जी के कृतित्व में ये चरित्र नायक और नायिका बन कर सामने आए और बाकी के चरित्र इनके सामने गौण रह गए।

इतने शक्तिशाली चरित्रों को कथा के विश्व में शक्ति प्रदान की कुछ ऐसे मिश्रित संवादों ने जिनकी तुलना आज के समय में पनप रही मिश्रित भाषा से की जा सकती है। इस प्रकार की भाषा में संवाद या वाक्य की मूल संरचना किसी और भाषा से ली जाती है और मूल संवाद का सार निकल कर आता था किसी और भाषा के शब्द से। दूसरे शब्दों में हम हम ये भी कह सकते हैं कि पुष्पा जी की कहानियों में आंचलिक भाषाओं के आधार पर गढ़े गए संवादों में प्रचलित भाषा के शब्दो का प्रयोग बड़े ही आकर्षक ढंग से किया गया है। उदाहरण के तौर पर हम उनकी कुछ कहानियों के संवादों की विवेचना कर सकते हैं। उनकी एक कहानी का संवाद इस प्रकार है–

''मैंने तो तुम्हारी नसीहत, तुम्हारी कहनावत सर आंखो पर रखी थी अम्मा! आज तक याद है तुम्हारे बोल, बेटी, अपने रिजक में भेदभाव, बैर मिताई, ऊंच–नीच का ठौर नहीं है।''

उपरोक्त संवाद में अरबी भाषा का शब्द ''नसीहत'', हिन्दी भाषा का शब्द ''ऊंच–नीच'' और बुंदेलखंड की आंचलिक भाषा का शब्द ''ठौर'' बड़ी सफाई से गूँथा गया है। ऐसा नहीं है कि ये संवाद सिर्फ भाषा की सहूलियत के लिए लिख दिया गया है। इस संवाद को बोलने वाले चरित्र की पृष्ठभूमि भी ऐसी बनाई गयी है जो ये संवाद आसानी से और तर्कपूर्ण तरीके से बोल सके। संवाद को बोलने वाली महिला एक ऐसे व्यवसाय से आती है जहां आंचलिक प्रभाव होने के बाद भी उसका मेलजोल और अंतरंगता समाज के बड़े लोगों से भी है। यही कारण है कि अरबी और हिन्दी के शब्द उसके भाषा में अजीब नहीं लगते। जेहन, लियाकत, तफरीह और अदावत जैसे सैकड़ों अरबी शब्द पुष्पा जी की कहानियों में हिन्दी निष्ठ वाक्यों में ठीक उसी तरह गुँथे हुये हैं जैसे वास्तविक जीवन में गंगा–जमनी तहजीब के अंदर हिन्दू और मुस्लिम संस्कृतियां आपस में गूँथी गयी हैं।

पुष्पा जी का भाषा पक्ष व्याकरण की दृष्टि से कितना आकर्षक और प्रयोगधर्मी है इसका अंदाजा इस बात से भी लगाया जा सकता है की उन्होने की कई अवसरो पर संस्कृतनिष्ठ वाक्यों में क्लिष्ट–फारसी शब्दो को इस प्रकार स्थान दिया कि भाषा भेद ही विलोपित हो गया। ऐसा ही एक उदाहरण निम्न विवरण में देखा जा सकता है – ''द्वार की धजा बदल चुकी है.शामियाने में वर वधू के लिए दो महाराज कुरसिया, लाल मखमल से जड़ी हुयी, सुनहरे हत्थो वाली, सिंहासन की तरह डाल दी गयी हैं।''

उपरोक्त वाक्य को व्याकरण के दृष्टिककोण से देखने पर हम पाते हैं कि वाक्य संरचना संस्कृतनिष्ठ है जहां कम से कम शब्दों में क्रिया और अन्य तत्वों को परिभाषित किया गया है। इस संरचना में एक और 'शामियानां' और 'मखमल' जैसे फारसी शब्द सामने आते हैं तो दूसरी ओर द्वार और 'ध्वजा' जैसे संस्कृतनिष्ठ शब्दों को एक आंचलिक स्वाद देकर परोसा जाता है। पुष्पा जी की कहानियों में कई फारसी शब्दों का खुल कर उपयोग हुआ है, मगर सबसे अच्छी बात ये है कि ये शब्द उन स्थानों पर आते हैं जहां पाठक के भावपक्ष को नए स्तर पर पहुँचना होता है। उदाहरण के तौर पर एक ग्रामीण महिला के साथ हुये शारीरिक शोषण का विवरण देते समय 'बदहवास' शब्द का आना इस बात का द्योतक है कि मैत्रेयी पुष्पा की कलम भाषा के भावपक्ष के प्रति अधिक झुकाव रखती थी। समीक्षा में इस प्रकार के शब्द लिखते समय हमें ये नही भूलना चाहिए की जिस समय पुष्पा जी साहित्य सृजन कर रही थी उस समय महिला लेखक मूल रूप से महानगरीय परिस्थितियों और महानगरीय पाठकों के मद्देनजर कहानियां लिख रही थी। इस प्रकार की कहानियों को

ISSN: 0974-0066

व्यावसायिक रूप से अच्छा प्रतिसाद मिलता था और बुद्धिजीवी तबके में इन्हे आसानी से स्वीकार कर लिया जाता था। पुष्पा जी ने भाषा के साधन में बदलाव करके ग्रामीण अंचल की कहानियो को महानगरों तक पहुंचाया।

ऐसा करने के लिए उन्होने क्लिष्ट संस्कृत शब्दो के इस्तेमाल में भी कोई परहेज नहीं रखा। उत्फुल्ल, उपालंभ, व्यामोह और प्रत्यावर्तन जैसे शब्द उनके वाक्यो में मूल भाषा की तरह ही परिनिष्ठित दिखाई दिये। ऐसा नहीं है कि उनका साहित्य पढ़ना महानगरीय लोगों के लिए चुनौती था। इस साहित्य में सुलभता लाने के लिए केजुयलिटी, डॉक्टर, ट्रान्सफर जैसे प्रचलित शब्दो को भी पूरा स्थान दिया। इस वजह से ये भाषा प्रवाहमयी ही रही। भाषा के दृष्टिकोण से कहा जा सकता है कि पुष्पा जी की रचनाएं उस खूबसूरत गुलदस्ते की तरह हैं जिसमें हर भाषा के शब्द को उचित समय पर उचित स्थान इस प्रकार दिया गया ताकि भाषा का प्रवाह कभी टूट न सके और पाठक घटनाओं की तारतम्यता से हमेशा बंधा रहे। शब्दो के साथ कई आंचलिक मुहावरों और लोकोक्तियों को भी पुष्पा जी ने बड़ी सटीकता से अपने संवादो में इस्तेमाल किया है।''पूत कपूत तो क्यों धन संचय'', जैसी प्रसिद्ध लोकोक्ति का इस्तेमाल इसका प्रमुख उदाहरण है। कहानी के जिस संवाद में इस लोकोक्ति का इस्तेमाल हुआ है वो आगे चल कर कहानी के लिए रीढ़ की हड्डी का काम भी करता है। लोकोक्ति को कहानी की मुख्य लय में शामिल करके पुष्पा जी ने एक प्रकार के सांस्कृतिक आदान–प्रदान को भी बढ़ावा दिया है। इस प्रकार का आदान–प्रदान आवश्यक है क्योंकि इसी माध्यम आंचलिक साहित्य के गूढ और जीवन में बसे हुये भावों को मुख्य धारा के साहित्य में स्थान मिलता है।

ग्रामीण जीवन का यथार्थ ढूंढती असभ्यता

वर्तमान समय में बुद्धिजीवी वर्ग में एक विवाद चल रहा है। ये विवाद ओ.टी.टी मंचो पर गालियों के उपयोग से जुड़ा है। लेखकों के एक वर्ग का मानना है की सामाजिक प्रदर्शन हेतु निर्धारित मंचो पर असभ्य भाषा से परहेज रखा जाना चाहिए क्योंकि इन मंचो को देखकर युवा पीढ़ी भी अपनी शब्दावली तय करती है। मगर दूसरा वर्ग ये भी मानता है की असभ्यता भी चरित्र के यथार्थ को प्रस्तुत करती हैं। दूसरे शब्दो में हम कह सकते हैं कि असभ्यता वह आवश्यक विषयवस्तु है जो चरित्र से जुड़ी सामाजिक परिस्थिति का असली मर्म सभी के सामने लाती हैं। हालांकि वर्तमान परिपेक्ष्य में ये कहना आवश्यक है कि ओ.टी.टी. मंचो पर गालियो का दुरुपयोग किया जा रहा है। अधिकतर मामलो में ये गालियां सिर्फ गुदगुदाने या कुत्सित मनोरंजन परोसने का कार्य करती हैं। मगर पुष्पा जी के साहित्य के साथ ऐसा नहीं है। इस साहित्य में गालियां जैसे असभ्य शब्द कहीं न कहीं चरित्र को सजीव बनाकर उसे कहानी की मूल विषय–वस्तु में स्थापित करती हैं।

पुष्पा जी जिस युग में साहित्य सृजन कर रही थी उसे समय का समीक्षक मानते थे कि यदि साहित्यकार सस्ती एवं स्तरहीन भाषा का प्रयोग करेंगे तो यह साहित्य और समाज दोनों के लिए अच्छा नहीं होगा। इस समय असभ्यतात्मक शब्दों का प्रयोग गलत माना जाता था। ऐसा करने पर साहित्य के ऊपर सस्ते साहित्य का ठप्पा लगा दिया जाता था। इस नाते पुष्पा जी को काफी आलोचना भी सहनी पड़ी। उनकी कहानियों में गालियों का उन्मुक्त प्रयोग स्याही के उस छोटे से धब्बे की तरह था जिसके पड़ने के बाद पन्ने पर लिखी धार्मिक इबारत का भी कोई मायना नहीं रहता। इस आधार पर ये भी कह सकते हैं कि पुष्पा जी की कहानियां अपने समय से काफी आगे थी। जैसे–जैसे समय बीतता जा रहा है और आधुनिक जगत के पाठक इन कहानियों से रूबरू हो रहे हैं, इनकी लोकप्रियता बढ़ती जा रही है।

ISSN: 0974-0066

जिस समय पुष्पा जी ये उन्मुक्त साहित्य लिख रही थी उस समय उन्हे काफी समीक्षकों ने प्रोत्साहित भी किया। ठीक इसी समय समीक्षकों का एक स्कूल ऐसा भी था जो यह मानता था कि गालियों में जीवन का यथार्थ छिपा है। पुष्पा जी की कहानियां इस दूसरे स्कूल की विचारधारा को बल प्रदान करती हैं। इन्हें पढ़कर साफ देखा जा सकता है, ये गालियां ठूँसी नहीं गयी हैं अपितु ये ग्रामीण भाषा का एक अभिन्न अंग हैं। सिर्फ क्रोध ही नहीं बेबसी और दुलार जैसे कई भाव यहाँ गालियों के माध्यम से प्रदर्शित किए जाते हैं। पुष्पा जी की कहानियों में किरदारों ने जो गालियां दी या किरदारों को जो गालियां दी गई उन सभी में एक सामाजिक स्थिति का भी चित्रण होता है।

असभ्यात्मक संवाद उस भावनात्मक दूरी को दर्शाता है जिसके अंतर्गत घर की चारदीवारी के अंदर भावनात्मक आवेग धीरे–धीरे घरेलू हिंसा का रूप धारण कर लेता है। इसके अतिरिक्त ये संवाद कहीं न कहीं विवाह और प्रेम के उन जटिल रिश्तों को भी दर्शाता है जिसके अंतर्गत पति का आक्रामक व्यवहार रिश्तों के प्रति उसकी विश्वसनीयता को प्रदर्शित करता है। इस आधार पर ये भी कहा जा सकता है कि गालियों से सज्जित मैत्रेयी पुष्पा का साहित्य साधारण जीवन को एक समारोह बना देता है। इन कहानियों में गालियां जीवन की उन घटनाओ को रेखांकन कर देती हैं जो मध्यम वर्ग या कुलीन वर्ग के लिए बड़ी घटनाएं हैं।

गालियों का इस प्रकार का विशिष्ट प्रयोग पुष्पा जी की रचनाओं को आज के समय में समीचीन बनाता है। यदि लेखन विधा और उससे जुड़े फैशन को मानदंड मानकर पुष्पा जी की कहानियों को बुक्शेल्फ में रखा जाए तो उनकी ज्यादातर कहानियां आज की पीढ़ी के लिए भी उतनी ही आकर्षक है जितनी उनके समय में रहीं। इसका कारण भावपक्ष और मनोरंजन का सही सामन्जस्य माना जा सकता है। कहानियों के भाव पक्ष में आकर्षक शब्दों, फारसी, अरबी, उर्दू और हिंदी के भारी भरकम शब्दों का उपयोग है। समय–समय पर पाठकों को गुदगुदाने के लिए उपयुक्त गालियों का भी सटीक उपयोग किया गया है। उनकी हर कहानी में मनोरंजन मान की पर्याप्त उपस्थिती है। इस कारण उनकी कहानियां कालजयी हो गयी।

पुष्पा जी की विशिष्ट भाषा शैली की विवेचना करते समय यह कहा जा सकता है कि उन्होंने अपने साहित्य में एक विशिष्ट सूक्ष्म रूप शैली का निर्माण किया। इस सूक्ष्म रूप शैली के अंतर्गत उन्होंने बड़ी चतुराई से चरित्र से जुड़ी हुई गहनता और पाठकों के मन में उठ रहे सवालों को एक साथ साधा है। उनकी रचनाएं विशिष्ट हो जाती हैं क्योंकि वह चरित्र का विवरण तो खूबसूरती के साथ करती ही है साथ ही साथ पाठकों के मन में उठ रहे सवालों के जवाब एक ऐसी भाषा में दे देती हैं जो पाठकों के लिए सुलभ है। इस प्रकार के सेतु का निर्माण होने की वजह से उनकी हर कहानी सार्वभौमिक बन जाती हैं। इन कहानियो को पढ़ते समय पाठक एक नई संस्कृति के भीतर प्रवेश करके उसे संस्कृति की बड़ी बारीकियां को समझ सकता है।

यही कारण है कि कई महानगरीय समीक्षकों ने पुष्पा जी की कहानियों में ग्रामीण अंचल में प्रचलित फेमिनिज्म के तत्व ढूंढ लिए। इसे समझने के लिए पुष्पा जी के जीवन वृतांत पर दृष्टिपात करना भी आवशयक है। यहाँ उन्होंने अपने कई साक्षात्कारों में कहा है कि उनकी कहानी 'सत्यता और जांची परखी परिस्थितियों का समावेश हैं। उन्होने अपनी कहानियों में उस जीवन को उकेरने का प्रयास किया है जो उन्हें अपने आसपास दिखाई दिया। दूसरे शब्दों में यह भी कहा जा सकता है कि पुष्पा जी का साहित्यिक जीवन यह संदेश देता है कि भाषा सिर्फ प्रस्तुतीकरण का माध्यम नहीं है बल्कि उसके पीछे खड़ा हुआ शख्स, व्यक्तित्व या किरदार है जो पूरी तरह से मानवीय भावनाओं से ओतप्रोत है।

ISSN: 0974-0066

भाषा का पाठक की उत्सुकता स्तर पर प्रभाव

जिस प्रकार किसी पद्य की सफलता को निर्धारित करने के लिए उसकी गेयता को तौला जाता है कि वह संगम, आसान ताल और सप्तक से हो तो वह पद्य आसानी से एक गीत बन जाता है, ठीक उसी प्रकार किसी गद्य खंड की सफलता को निर्धारित करने के लिए देखा जाता है कि वह अंत तक उत्सुकता बनाने में सफल रहता है या नहीं! यदि मेहनत न की जाये तो गद्य एकदम सपाट भी हो सकते हैं और इस सपाट स्थिति में अक्सर ये गद्य उबाऊ प्रतीत होते हैं। पुष्पा जी ने एक तरफ जहां अपनी भाषा के साथ नए–नए प्रयोग किए वहीं दूसरी तरफ उन्होंने संवादों को भी कहानी में इस प्रकार पिरोया है जहां पर संवादों के आने की वजह से कहानी में एक अलग प्रकार की उत्सुकता का निर्माण हुआ। उदाहरण के तौर पर हम देखते हैं कि दहेज के विषय पर लिखी गई उनकी एक साधारण सी कहानी सिर्फ संवादों की वजह से आखरी समय तक पाठक को बांधे रखती है। इसके अलावा उनके बड़े उपन्यासों और लंबी कहानियों में कई स्थानों पर इस प्रकार के चुटीले और गुदगुदे संवाद आते हैं जो पहले–पहल पाठकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं और उनको कहानी के वातावरण से ओत–प्रोत रखते हैं। संवादो का कथोपकथन पाठकों को उलझा लेता है। इस वजह से उसकी उत्सुकता लगातार बनी रहती है। यहाँ पर संवाद एक प्रकार से गागर में सागर भी भरते हुए नज़र आता है जहां संवादों के माध्यम से कई बार पुष्पा जी बड़ी–बड़ी बातें सबसे आसान शब्दों में कहती चली जाती हैं।

यदि किसी छायाचित्र या फीचर फिल्म के लिए एडॉप्शन की बात हो तो मैत्रेयी पुष्पा जी की कहानी और उनका साहित्य सदैव समीचीन है क्योंकि यहां पर चरित्र की क्रियाशीलता को संवादों के माध्यम से एवं अन्य कार्यकलापों के माध्यम से हमेशा सजीव रखा गया है। दूसरे शब्दों में यह भी कहा जा सकता है कि लेखक द्वारा दिए गए स्थिति के विवरण एवं वृतांतों के स्थान पर किरदारों द्वारा किए गए कार्यकलाप कहानियों को आगे बढ़ाते हैं। बारीकी से पढ़ने पर हम पाते हैं कि जहां कहीं भी कोई कहानी शिथिल होती नज़र आती है सही समय पर उनके संवाद कहानी को गति प्रदान कर देते हैं और पाठक फिर से कहानी के साथ जुड़ जाता है।

मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों में भाषा संतुलन किस प्रकार उनकी सहायता करता है इसका एक उदाहरण हम देख सकते हैं उन निश्चल प्रेम कहानियों में जिनसे उनके चरित्र गुजरते हैं। ग्रामीण परिवेश जहां प्रेम का सीधा संबंध शरीर, समाज और उसके बाद कुंठित भावना चक्र से होता है। पुष्पा जी ने बड़ी गहराई से रोमानियत ढूंढ ली, उनका साहित्य विशिष्ट है क्योंकि वे मानती हैं कि जिंदगी सिर्फ रोमानियत का नहीं संघर्ष का नाम भी है। इस कारण उनकी प्रेम कहानियों में संघर्ष का पुट मिलता है। और जिन कहानियों की विषयवस्तु संघर्ष पर आधारित है उनमें प्रेम का प्रस्फुटन भी दिख जाता है। इस संतुलन को सामने लाने में भाषा ने एक विशिष्ट भूमिका निभाई है।

निष्कर्ष :

सार रूप में कहा जा सकता है मैत्रेयी पुष्पा जी की कहानियों में भावपक्ष की मजबूती देखने को मिलती ही है साथ ही साथ आकर्षक भाषा का प्रादुर्भाव इन कहानियों को एक बड़े वर्ग से जोड़ता है और कामयाबी की इबारत भी लिखता है क्योंकि भाषा कभी भी कथा की रोमानियत, व्यंग, विम्ब, सामाजिक विम्ब, और कटाक्ष को कमजोर नहीं पड़ने देते। सही स्थान पर सही शब्दो का उपयोग इन कहानियों को पुस्तक की दुकानों में लंबी आयु प्रदान करता है और नयी पीढ़ियो को भी इनसे लगातार जोड़ता जा रहा है।

ISSN: 0974-0066

संदर्भ सूची

डॉक्टर,लक्ष्मीनारायण लाल, हिन्दी कहानियों की शिल्पविधि का विकास, 1960, पृष्ठ 344
जैनेन्द्र कुमार, साहित्य का श्रेय और प्रेय, 1991, पृष्ठ 185
मैत्रेयी पुष्पा, गोमा हँसती है, 1998, पृष्ठ, 39
मैत्रेयी पुष्पा, चिन्हार, 1998, पृष्ठ, 51
डॉक्टर ओम प्रकाश शुक्ल, हिन्दी उपन्यास की शिल्पविधि का विकास, 1964, पृष्ठ 58